ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-2* May- 2021
Anthology : The Research

पर्यावरण संरक्षण और मानव
Environmental Protection and Human

Paper Submission: 15/05/2021, Date of Acceptance: 25/05/2021, Date of Publication: 26/05/2021

लाला राम मीना
सह आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग,
स्व.प.न.कि.श.राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थान, भारत

सारांश

''धरती और प्राकृतिक संसाधन कभी विरासत में नहीं मिलते बल्कि इन्हें अपने बच्चों से उधार लेना होता है और उससे आगामी पीढ़ी को ब्याज सहित लौटाना होता है।''

हमारे चारों आरे जो भूमि, जल, वायु, पेड़–पौधे व जीव जन्तुओं का समूह खिाई देता है, यही पर्यावरण है। पर्यावरण के जैविक व अजैविक घटक आपस में अन्तःक्रिया करते हैं और सम्पूर्ण तंत्र में जो प्रकिया देखने को मिलती है उसे हम पारिस्थितिकी तंत्र के नाम से जानते हैं। मानव को एक अलग इकाई व उसके चारों ओर की सभी वस्तुओं को पर्यावरण के रूप में भी परिभाषित किया जाता है।

"Earth and natural resources are never inherited, but they have to be borrowed from their children and returned with interest to the next generation."

The group of land, water, air, trees and plants and animals that surrounds us, this is the environment. The biotic and abiotic components of the environment interact with each other and the process which is seen in the whole system is known as ecosystem. Human being is also defined as a separate entity and all the things around it as environment.

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, संरक्षण, तादात्म्य ,कालांतर, हस्तांतरित, आधुनिकता, संस्कारों, पर्यावरण, परियोजना, संग्रहणकर्ता, आदिवासियों, रुढ़िवादिता, साहचर्य, आन्दोलन।

Globalization, Protection, Union, Identity, Time, Transferred, Modernity, Culture, Environment, Project, Collectors, Tribals, Rampals, Conservatism, Association, Movement.

प्रस्तावना

वर्तमान समय में कुछ मानव सभ्यताएं अपने को प्रकृति से अलग नहीं मानती हैं उनके लिए समस्त प्रकृति ही एक इकाई है। आज तकनीकी रूप से अपने को विकसित समझने वाले ही मानव को प्रकृति से अलग मानते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि विज्ञान व तकनीक के प्रयोग से प्राकृतिक दषाओं को बदला जा सकता है। मानव हस्तक्षेप की अधिकता या न्यूनता के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में विभाजित करके समझा जा सकता है– एक प्राकृतिक पर्यावरण व दूसरा मानव निर्मित पर्यावरण। यद्यपि आज न तो पूर्णरूपेण प्राकृतिक पर्यावरण देखने को मिलता है और न ही पूर्णतः मानव निर्मित । तकनीकी दृष्टि से सक्षम मानव ने अपने आर्थिक उद्धेष्यों को प्राप्त कर विलासिता के जीवन के लिए प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर प्राकृतिक पर्यावाण को असंतुलित कर दिया है जिससे प्रकृति के अस्तित्व को खतरा दिखाई देने लगा है।[1]

वैज्ञानिकों का मानना है कि धरती के वायुमण्डल का विद्यमान संघटन और इसमें आक्सीजन की मात्रा न केवल पृथ्वी पर जीवन होने का कारण है अपितु इसका परिणाम भी है। वायुमण्डल के गठन को प्रकाष संष्लेषण की जैविक प्रक्रिया बहुत अधिक प्रभावित करती है। वैज्ञानिकों के ऐसे चिंतन सम्बंधी विचारधारा सम्पूर्ण पृथ्वी को एक इकाई मानती है।[2]

पृथ्वी का सबसे बड़ा पारितंत्र जैवमण्डल ही है। यह पृथ्वी का वह भाग है जिसमें जीवधारी पाये जाते हैं जो स्थलमण्डल, जलमण्डल व वायुमण्डल में फैला हुआ है। सम्पूर्ण पार्थिव पर्याचरण की रचना भी इन्हीं इकाईयों द्वारा होना

मानी जाती है। इस प्रकार वैष्विक पर्यावरण, जैवमण्डल और पार्थिव पारितंत्र सम्पूर्ण पृथ्वी को एक जीवन्तता (लिविंग अर्थ) एवं सार्थकता प्रदान करते हैं।[3]

पर्यावरण और मानव में अन्तःक्रियात्क सम्बंधों की नजर से देखा जाए तो प्रकृति मानव की सहचरी दिखाई देती है। दुनिया के जीवों में मानव प्राणी मात्र को ही योग्यता व बुद्धि प्राप्त है। मानव अपनी बुद्धि के द्वारा ही पर्यावरण के भौतक परिवेष में सामाजिक, राजनीतिक व तकनीकी क्रियाओं द्वारा बदलाव कर सांस्कृतिक परिवेष की रचना करता है। पर्यावरण के संतुलन से मानव को स्वस्थ जीवन प्राप्त होता है। इसलिए हमारे ऋषि–मुनि पर्यावरण को ष्षुद्ध करने की यज्ञ जैसी वैज्ञानिक विधि अपनाते थे व प्रकृति की सुरक्षा व विकास के लिए कटिबद्ध थे। उनका मानना थ कि मानव के लिए प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से जो भी प्रतिकुल है प्रकृति उसे बाहर कर संतुलन बना देती हैं। ज्वलामुखी द्वारा पृथ्वी जो कुछ भी देती है, मानव मात्र उसी का अधिकारी है। आदिम समाजों को पर्यावरण का समुचित ज्ञान होता था। मानव ने अग्नि व दूसरे यंत्रों का प्रयोग पर्यावरण को बदलने के लिए सीखा। विभ्मिन्न प्रयोंगों एवं जांचों के माध्यम से मानव अपने प्राकृतिक ज्ञान में वृद्धि करता रहता है और इस ज्ञान के विस्तृत भण्डार को विज्ञान का नाम दिया गया है। इस प्रकार मानव ने पर्यावरण के व्यवस्थित अध्ययन के लिए पर्यावरण विज्ञान का विकास कर लिया। इस विज्ञान के सहारे मानव ने आर्थिक, भौतिक व सामाजिक जीवन की प्रत्येक दिषा में बेहद प्रगति कर स्वयं का हित साधा है। मानव की इस प्रगति ने पर्याचरण पर पड़ने वाले प्रभावों पर थोड़ा भी ध्यान नहीं दिया। मानव की इन विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति ने पर्यावरण के लिए गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर दी है। इन समस्याओं को जल प्रदूषण, वायुप्रदूषण, लगातार घटते वन्य जीव, कीटनाषकों से उत्पन्न जहर, रासायनिक विकिरणों के जैविक दुष्प्रभाव, अस्थिर पारिस्थितिकी तंत्र, प्राकृतिक सम्पदा का दुरूपयोग, जनसंख्या वृद्धि, षहरीकरण के रूप में देखा जा सकता है। यह सब मानव की व्यक्तिगत व सामाजिक पर्याचरण की ना समझ ही कही जा सकती है जिसने मानव व पर्यावरण की समस्त क्रियाओं को प्रभावित किया हैं। मानव व पर्यावरण की इन क्रियाओं को दो भागों में बांट कर समझा जा सकता है[4]–

मानव पर्यावरण का अन्तःक्रियात्मक कालिक पक्ष

यह एक ऐसा विविधतापूर्ण पक्ष है जिसमें मानव उत्पत्ति से लेकर आज तक सृष्टि ने संघर्ष टालने कें उद्धेष्य से मानव को श्रेष्ठ गुण देकर उसे सृष्टि कर श्रेष्ठतम जीव बनाया है। इसी कारण से मानव पर्यावरण का घटक व कारक माना जाता है। मानव ने अपने पौरूष, ज्ञान–विज्ञान, तकनीक, उद्यम, और कल्पना षक्ति के बल पर भौतिक परिवेष के साथ सांस्कृतिक परिवेष का निर्माण किया है। यह सांस्कृतिक भू–दृष्य की रचना विज्ञान के क्रमिक विकास को बताती है। आखेट युग की अपेक्षा पषुपालन युग का एक अलग सांस्कृतिक रूप था। प्रौद्योगिकी युग ने तो कृषि युग का स्वरूप ही बदल दिया। आज गगनचुम्बी इमारतें व अट्टालिकाएं मानव उन्नति का प्रतीक हैं, इनमें रहने वाले मानव विकसित समाज का द्यौतक है। जो आज भी गरीबी के कारण झौपड़ी में ही रहता है उसे पिछड़ा, जो कृषि व पषुपालन करता है वह अर्द्धविकसित कहलाता है। समझा जा सकता है कि इन तीनों ही मानवों का सम्बंध प्रकृति के साथ एक जैसा नहीं है। पिछड़ा समाज की अपनी उतनी ही आवष्यकताएं हैं जितनी परिवेष से पूरी हो सके। इन्हें प्रकृतिवदी कहा जाता है। अर्द्धविकसित समाज प्रकृति को खुष कर कुछ अधिक प्राप्त करने में सफल हो जाता है। विकसित मानव प्रकृति से छिना झपटी करता है और अपनी असीमित आवष्यतओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का उपभोग के प्रति संवेदनषील हो गया है। मानव की यह प्रवृति ही अपने असत्तिव के लिए गंभीर समस्या बन गई है।

मानव पर्यावरण का अन्तःक्रियात्मक स्थानिक पक्ष

मानव एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अपने परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारी से आबद्ध होकर अपने अनुकूल क्षेत्रों का चयन करते हुए सामूहिक कर्तव्य और दायित्व निवर्हन करता है। उसका यह चयन ही सम्पूर्ण समाज की आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण पर प्रभाव डालता है। मानव अपने ज्ञान–विज्ञान व तकनीकों के उपयोग से प्रकृति का अपनी इच्छा से उपयोग कर उपभोग करता है। प्रकृति व मानव की यह अन्तर्पक्रिया ही सामाजिक पारिस्थितिकी कहलाती है। मानव समाज की इस विष्वव्यापी प्रक्रिया में जनसंख्या विकास का स्तर, सांस्कृतिक विरासत, रीतिरिवाज, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक विचार, ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी उपलब्धियां, महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही मानव की पहचान का आधार भी है। मानव अपने परिसीमित क्षेत्र को बहु उपयोगी, अतिसुन्दर व स्वस्थ और श्रष्ठ बनाने की कौषिष करता है। वह प्रकृतिक संसाधनों का अपनी तकनीकी प्रयोग द्वारा अधिकाधिक अत्पादन करता है और उपभोग करता है। जो समाज अपने क्षेत्र के संसाधनों के उपयोग में पिछड़ जाता है वह अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य समाजों पर निर्भर हो जाता है या भूखमरी, अज्ञानता, बीमारी व गुलामी में जकड़ जाता है। इस प्रकार मानव समाज क्षेत्रीय स्तर पर ही विकसित, विकासषील, अविकसित आदि स्तरों में बंट कर अलग–अलग सांस्कृतिक परिमण्डलों की रचना करता है। आज की दुनिया इन्हीं सांस्कृतिक परिमण्डलों के अनेकों रूपों जैसे अमरीकी–आंग्ल परिमण्डल, आरब परिमण्डल, अफ्रीकी परिमण्डल, पष्चिमी यूरोपीय, आस्ट्रेलियाई, दक्षिणी पूर्वी–एषियाई परिमण्डल आदि नामों से जानी जाती है। इन सभी परिमण्डलों में मानव समाज अलग–अलग रूपों में दिखाई देता है। विकसित समाज जिसे अर्थिक समाज भी कहा जाता है प्रकृति का सबसे असीमित दोहन अपनी भैतिक सुख सुविधाओं के परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए करता है। प्रकृति मानव की सहचरी है परन्तु मानव द्वारा इसका असीमित दोहन ही प्राकृतिक विक्रति के रूप में पर्यावरण के लिए खतरा है। आज औद्योगिक देषों में अम्ल वर्षा, कोविड–19 जैसी नई–नई बिमारियां, उर्जा संकट, जल, वायु, एवं ध्वनि प्रदूषण, सांस्कृतिक विकार संसाधन भंडारों की तेजी से कमी सामान्य चर्चा के मुद्धे

हैं। मौसम का बिगड़ता स्वरूप , विभिन्न प्राकृतिक प्रकोप और जीवन के आधार तत्वों की गुणवत्ता में ह्रास, के सामने आज मानव घुटने टेकते जा रहा है।

आज मानव स्वार्थ की अंधी दौड़ में प्रकृति को समाप्त करने की ओर अग्रसर है। तत्काल उपलब्धियों के लिए प्रकृति का बेहद दोहन किया जा रहा है। आज नाना प्रकार के विकार मानव द्वारा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के ही परिणाम है। आज वन व वन्य जीव दोनों ही सुरक्षित नहीं है। ग्रामीण परिवेष में चरागाह, भूखण्ड की अनुपलब्धता से गौ पालन भी संकट में आ गया है। आज मानव गाय को केवल दूध दूहने तक घर पर रखता है अन्यथा उसे सड़कों पर अपने जैसे दूसरें मानवों के लिए काल बनाकर छोड़ देता है। गाय से ज्यादा दुर्गति आज किसी अन्य जानवर की नहीं है। उद्यौगों में उत्सर्जित रासायनिक पदार्थ धूल व धुंआ न केवल पृथ्वी की उर्वरता को समाप्त कर रहै हैं अपतु पीने योग्य जल को भी विषाक्त बना रहैं हैं। इसलिए मानव ने इन सब चीजों के प्रति जागरूक होते हुए भी स्वयं अपने को विभिन्न संक्रामक रोंगों का षिकार बना कर नारकीय जीवन जीने को तैयार कर लिया है।

पर्यावरण प्रदुषण एक विकराल समस्या

जीवन के लालन पालन हेतु पर्यावरण मानव के लिए प्रकृति का उपहार है। जीवन के लिए सभी उपयोगी तत्व हवा, पानी, पेड़, जंगल, व अन्य तत्व हमें पर्यावरण से ही मिलते हैं। धरती पर स्वस्थ जीवन का अस्तित्व ही स्वस्थ पर्यावरण है फिर भी हम विभिन्न तकनीको एवं मषीनों के प्रयोग से इसे समाप्त करने को उतारू हैं। पर्यावरण प्रदूषण आज मानव की दैनिक गतिविधियों को सामाजिक, षारीरिक, आर्थिक , भावनात्मक व बौद्धिक दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। आजीवन बमिारियों की सौगात दुनिया के मानव को मिल रही है।

पर्यावरण प्रदुषण का मानव जीवन पर प्रभाव

पृथ्वी पर विभिन्न चक्र हैं जो नियमित तौर पर पर्यावरण व जीवित चीजों के मध्य घटित होकर प्रकृति का संतुलन बनाये रखते हैं। जैसे ही यह चक्र डिस्ट्रब होता है पर्यावरण संतुलन भी डिस्ट्रब होकर मानव जीवन को प्रभावित करता है। हमारा पर्यावरण हमें हजारों वर्षों तक पनपने और विकसित होने में मदद करता है। वैसे ही जैसे मानव को प्रकृति द्वारा बनाया गया है। मानव पृथ्वी का सबसे बुद्धिमान प्राणी होने के कारण ब्रह्माण्ड के तत्वों को जानने का प्रयास करता है। यह प्रयास ही उसे तकनीकी उन्नति की ओर बढ़ाता है। यह उन्नति इको सिस्टम को समाप्त करदे इससे पहले मानव अपनी बुरी आदतें छोड़ दें। मानव भले ही विज्ञान व तकनीक का इस्तेमाल करे परन्तु पर्यावरण को क्षति पहुंचाने का दुस्साहस न करें। यदि समय रहते हमने पर्यावरण को संतुलित नहीं रखा तो मानव प्रजातियें के रंगरूप , आंख, नाक, षरीर की बनावट, बाल ठोडी , कपाल व चेहरा विकृत होकर अपनी पहचान खो देगा और जंगल के विलुप्त हो रहै जानवरों की तरह ही मानव भी एक दिन विलुप्त हो जाएगा।

विज्ञान के जनक अरस्तू का मानना है कि ठंडे प्रदेषों के लोग बुद्धिमान होने के साथ ही आलसी भी होते हैं।

अरब इतिहासकार इबने–खल्दून के अनुसार ठंडी जलवायु के लोगों में सजीवता का अभाव है, जबकि उष्णकटिबंध के लोग सजीव व हंसमुख तथा मिलनसार होते हैं।

जलवायु विषेषज्ञ हंटिग्टन के अनुसार ष्षीतोष्ण जलवायु प्रदेषों में जहां चक्रवाती मौसम रहता है तापमान 20 डिग्री सेल्सियस के आस पास और सापेक्षित आर्द्रता 60 प्रतिषत से अधिक रहती है वहां के लोगों में कार्यक्षमता बढी रहती है और अधिक एकाग्रता के साथ कार्य करते हैं।

यही कारण है कि ष्षीतोष्ण जलवायु के लोगों का उत्पादन अधिक एवं उच्च कोटि का होता है। मानव भूगोल के विषेषज्ञों के अनुसार मौसम एवं अपराधों में भी घनिष्ठ सम्बंध होता है। जैसे आत्महत्या, कत्ल जैसे अपराध ऐ विषेष समय एवं मौसम में होते हैं। मानव अपने प्रयास एवं टैक्नोलोजी की सहायता से मौसम एवं जलवायु के प्रभाव को परिवर्तित कर सकता है। मानव अपनी भोजन, कपड़ा एवं मकान जैसी आवष्यकताओं की पूर्ति जलवायु एवं संसाधनों के अनुसार ही करता है। वर्तमान में पृथ्वी व पर्यावरण में भारी परिर्वतन के लिए मानव की विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। महानगरों के प्राकृतिक पर्यावरण में बदलाव के रूप में देखा जा सकता है।[5]

मानव जीवन में बढ़ती विपन्नता के लिए मानव का वैचारिक प्रदूषण जिम्मेदार है। वैचारिक प्रदूषण का प्रभाव इन दिनों ऐसा चल रहा है कि जिसमें मानव को कुकृत्यों में निमग्न देखा जा सकता है। पेट और प्रजनन से आगे की बात किसी को सूझती ही नहीं है। संकीर्ण स्वार्थपरता की खुमारी ऐसी चढ़ी है कि लोभ व मोह की खाई पाटने के अतिरिक्त और कोई लक्ष्य सामने नहीं रह गया है। बड़प्पन की एक ही परिभाषा है, दूसरो की आंखो में चकाचौंध उत्पन्न कर अपनी विषेषता सिद्ध करना। नीति व अनीति का विचार किये बिना जितना भी हो संग्रह करते रहना, फिर उसे ठाट–बाट के प्रदर्षन, वैभव विलास और दुर्व्यसनों में जी खोल कर उड़ाना। परिवार के प्रति उत्तरदायित्व न निभा पाने पर भी संतान पैदा करते रहना।[6]

पर्यावरण सुरक्षा के उपाय एवं सुझाव

मानव समुदाय को मानव जनित पर्यावरणीय समस्या के हल के प्रयास करने होंगें। अगर इस समस्या का समाधान समय रहते नहीं किया गया तो एक दिन मानव जीव का असतित्व ही नहीं बचेगा। आम नागरिक को सरकार द्वारा आयोजित पर्यावरण आंदोलन में षामिल होकर जाग्रति लानी होगी। स्वार्थपरता त्याग कर पर्यावरण को स्वस्थ व सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी लेनी होगी। यद्यपि यह बहुत कठिन लगता है परन्तु प्रत्येक व्यक्ति का इस ओर उठाया गया कदम बदलाव के लिए एक सकारात्मक पहल कर पर्यावरण विकार को रोका जा सकता है। कृत्रिम उरर्वकों वाले खाद्य पदार्थों ने हमारे षरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को समाप्त सा कर जीवन

को खतरे में डाल दिया है। जैविक खाद्य पदार्थों के जीवन से बाहर हो जाने से मानव स्वस्थ एवं खुष तो देखा जा सकता है, परन्तु किसी भी समय गंभीर रोग से ग्रसित हो सकता है। स्वस्थ भोजन–पानी के लिए प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करके ही मानव स्वस्थ जीवन जी सकता है। षहरीकरण, औद्योगीकीकरण एवं इससे बढ़कर हमारा प्रकृति के प्रति आर्थिक व्यवहार से जनित समस्याओं के लिए मानव को विष्व पर्यावरण की मुहिम को बढ़ चड़ कर भाग लेकर सार्थक बनाना होगा। यह सर्वदा सत्य है कि पूरे ब्रहमाण्ड में केवल धरती पर ही जीवन है। जीवन की वास्तिविकता को बनाये रखने के लिए हैं पर्यावरण की वासतिवकता को बनाये रखना होगा। 5जून को विष्व पर्यावरण दिवस पर ऐसी जाग्रति लाने का प्रयास किया जाये कि मानव अपनी विध्वंसात्मक आदतो से बाज आकर पर्यावरण को हानि न पहुंचाने के लिए प्रतिज्ञा कर ले। मानव छोटे–छोटे आसान तरीको से पर्यावरण को सुरक्षित कर सकते हैं जैसे– प्लास्टिक बैग का प्रयोग न करना, अपषिष्ट पदार्थों को उपयुक्त स्थान पर ही डालना, पुरानी चीजों को नये तरीके से इस्तेमाल करना– जिन्हैं दुबारा चार्ज किया जा सकता है उन बैटरी का उपयोग करें, प्रतिदीप्त प्रकाष का निर्माण करें, बारिस के पानी का संरक्षण करें, पानी का अपव्यय कम करें, ऊर्जा संरक्षण कर बिजली की खपत कम करें। इस प्रकार हम पर्यावरण स्वस्थ रूप में बनाये रखने में कामयाब हो पायेगें।

निष्कर्ष

अन्ततः पर्यावरणीय समस्याएं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन आदि मानव को अपनी जीवनषैली के बारे में पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रही है। अब पर्यावरण संरक्षण व पर्यावरण प्रबंधन की चर्चा है। चर्चा यह भी है कि मानव तकनीक व वैज्ञानिक उपकरणों से हुए परिवर्तनों एवं नुकसान को कितना कम करने में सक्षम है। आर्थिक व राजनीतिक हितों की टकराव में पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा सकता है, और मानवता पर्यावरण के प्रति कितनी जागरूक है, ये आज के ज्वलंत प्रष्न हैं। प्रत्येक जीव के सुविधानुसार उपभोग संरचना का निर्माण प्रकृति ने पृथ्वी पर रहने वाले हरेक प्राणी के लिए किया है, परन्तु मानव यह समझ बैठा है कि धरती पर जो भी पषु–पक्षी, पेड़–पौधे, कीट–पतंगे, नदी, पर्वत, समुद्र आदि हैं, ये सब उसके उपभोग की वस्तुएं हैं और वह पृथ्वी का मनमान उपयोग कर सकता है। आज मानव समृद्ध व उन्नत तो बन गया है परन्तु पर्यावरण असंतुलन के दुष्परिणाम भी झेल रहा है। पर्यावरण सुरक्षा से ही पृथ्वी की प्राकृतिक षोभा बनी रह सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सक्सेना, हरिमोहन (1995) : पर्यावरण एवं प्रदूषण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।*
2. *सिंह, सविन्द्र (2004) : पर्यावरण भूगोल प्रयाग, पुस्तक भवन प्रयागराज (उ.प्र.)*
3. *बंसल, सुरेष चन्द (2015–16) : पर्यावरण एक अध्ययन, मीनाक्षी प्रकाषन मेरठ (उ.प्र.)*
4. *सक्सेना, हरिमोहन (1995) : पर्यावरण एवं प्रदूषण,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।*
5. *दीप्ति शर्मा एवं महेन्द्र कुमार 2009 : मानव एवं पर्यावरण अर्जुन पब्लिषिंग हाउस नई दिल्ली*
6. *राजस्थान सुजस, पर्यावरण संरक्षण 20 जून 2020 पॉपूलर प्रिन्टर्स जयपुर।*
7. *डॉ. विप्लव – भारत में महिला मानवाधिकार, 2012, राहुल पब्लिषिंग हाऊस, मेरठ (यू.पी)*
8. *बी.टी थामिलमारन – हुमन राइट्स इन थर्ड वर्ड पर्सपेक्टिव, पेज नं. 97*
9. *दीप्ति शर्मा एवं महेन्द्र कुमार 2009 : मानव एवं पर्यावरण अर्जुन पब्लिषिंग हाउस नई दिल्ली*
10. *दिलीप जाखड़ – मानवाधिकार, 2004, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा.लि जयपुर।*
11. *डी.आर.सक्सेना – लॉ, जस्टिस एण्ड सोषल चेन्ज, पेज नं. 432*
12. *डी.डी बसु – भारतीय संविधान : एक परिचय, 1994*
13. *एस.के.बोस – इण्डियन वूमेन थ्रो एजेज, पेज नं. 121*
14. *राजस्थान सुजस, पर्यावरण संरक्षण 20 जून 2020 पॉपूलर प्रिन्टर्स जयपुर।*
15. *शोभा राजोरिया – महिला और कानून 2011, ब्लू स्टार इन्दौर (म.प्र)*
16. *सुभाष शर्मा – भारत मे मानवाधिार 2009, नेषनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली।*
17. *भारत की जनगणना 2011*
18. *स्थानीय समाचार पत्र, पत्रिकाएँ राजस्थान।*